पौराणिक राशि परिचय

ज्योतिषीय पुस्तकों और इंटरनेट आदि में विभिन्न प्रकार के राशि परिचय, उनके विचरण स्थान, अंग, चिह्न और वर्णन देखकर इनका ज्योतिषीय मूल स्रोत जानने की इच्छा प्रबल होती है। प्रचलित ज्योतिषीय ग्रन्थों में भी यत्र-तत्र बिखरे परिचय से उस राशि के चिह्न की कल्पना करना भी पूर्ण रूप से सम्भव नहीं हो पाता।

सुशील अग्रवाल

राशि के मूल परिचय हेतु मैंने वेदों और पुराणों में राशि परिचय की खोज प्रारम्भ की तो सौभाग्यवश श्रीवामनपुराण में राशियों का मूल और विस्तृत वर्णन प्राप्त हुआ, जो इस प्रकार है :

दक्ष यज्ञ के विध्वंस के समय आकाश में स्थित शिवजी का अति विशाल रूप देखकर पुलस्त्य ऋषि ने उन्हें कालरूपी कहा, क्योंकि इस रूप में शिवजी ने क्रोध हरीहरण रूपधारी यज्ञ को बाणों से मारा था। इस पर नारदजी ने पुलत्स्य ऋषि से शिवजी के सम्पूर्ण स्वरूप और लक्षणों की व्याख्या करने के लिए कहा था।

पुलस्त्य ऋषि ने नारद जी को राशियों का वर्णन करते हुए आग्रह किया था कि इस प्राचीन रहस्य को किसी अपात्र से नहीं बताएं, क्योंकि वेद-पुराणों का निर्माण लोकहित भावना से निहित होकर ही किया गया था। मैंने राशि वर्णन को चित्रांकित भी करने का प्रयास किया है, जिससे चिह्न से ही अधिक से अधिक राशि के गुण, स्वभाव, स्थान आदि का पता चल सके। इस लेख में दिए गए राशि चित्र भी मौलिक हैं।

यत्राश्विनी च भरणी कृत्तिकायास्तथांशकः।
मेषो राशिः कुजक्षेत्रं तच्छिरः कालरूपिणः।।
मेषः समानमूर्तिश्च अजाविकधनादिषु।
संचारस्थानमेवास्य धान्यरत्नाकरादिषु।।
नवशाद्वलसंछन्नवसुधायां च सर्वशः।
नित्यं चरति फुल्लेषु सरसां पुलिनेषु च।।

सम्पूर्ण अश्विनी नक्षत्र, सम्पूर्ण भरणी तथा कृत्तिका के प्रथम चरण से युक्त भौम (मंगल) का क्षेत्र मेष राशि ही कालरूपी महादेव का सिर कही है। मेष राशि भेड़ के समान आकार वाली होती है। बकरी, भेड़, धन-धान्य एवं रत्नाकरादि (खान, जिसमें से रत्न आदि निकलते हों) इसके संचार स्थान हैं तथा नवदुर्गा से आच्छादित पूरी पृथ्वी और पुष्पित वनस्पतियों से युक्त सरोवरों में यह नित्य संचरण करती है।

आग्नेयांशास्त्रयो ब्रह्मन् प्राजापत्यं कवेर्गृहम्।
सौम्यार्द्ध वृषनामेदं वदनं परिकीर्तितम्।।
वृषः सदृशरूपो हि चरते गोकुलादिषु।
तस्याधिवासभूमिस्तु कृषीवलधराश्रयः।।

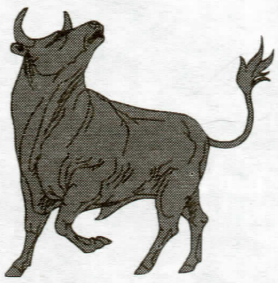

कृतिका के अन्तिम चरण, सम्पूर्ण रोहिणी नक्षत्र एवं मृगशिरा के प्रथम दो चरण, यह शुक्र की वृषभ राशि ही उनका मुख है। वृषभ के समान रूप युक्त वृषभ राशि गोकुलादि में विचरण करती है तथा कृषकों की भूमि इसका निवास है।

मृगार्द्धमार्द्रादित्याशांस्त्रयः सौम्यगृहं त्विदम्।
मिथुनं भुजयोस्तस्य गगनस्थस्य शूलिनः।।
स्त्रीपुंसयोः समं रूपं शय्यासनपरिग्रहः।
वीणावाद्यधृङ् मिथुनं गीतनर्तकशिल्पिषु।।
स्थितः क्रीडारतिर्नित्यं विहारावनिरस्य तु।
मिथुनं नाम विख्यातं राशिर्द्वैधात्मकः स्थितः।।

मृगशिरा के शेष दो चरण, सम्पूर्ण आर्द्रा और पुनर्वसु के प्रथम तीन चरण बुध की मिथुन राशि आकाश में स्थित शिव की दोनों भुजाएं हैं। मिथुन राशि एक स्त्री और एक पुरुष के साथ-साथ रहने के समान रूप वाली है। पुरुष-स्त्री के हाथों में वीणा और अन्य संगीत यन्त्र हैं। इस राशि का संचरण गाने वालों, नाचने वालों और शिल्पियों में होता है। इस द्विस्वभाव राशि को मिथुन कहते हैं। इस राशि का निवास क्रीड़ास्थल और विहार भूमियों में होता है।

आदित्यांशश्च पुष्यं च आश्लेषा शशिनो गृहम्।
राशिः कर्कटको नाम पार्श्वे मखविनाशिनः।।
कर्कः कुलीरेण समः सलिलस्थः प्रकीर्तितः।
केदारवापीपुलिने विविक्तावनिरेव च।।

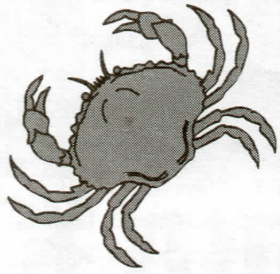

पुनर्वसु का अन्तिम चरण, सम्पूर्ण पुष्य और अश्लेषा नक्षत्रों वाला चन्द्रमा का क्षेत्र कर्क राशि यज्ञ विनाशक शंकर की दोनों बगल हैं। कर्क राशि केकड़े के रूप के समान रूप वाली हैं और जल में रहने वाली है। जल से पूर्ण क्यारी और नदी किनारा अथवा बालू का स्थान तथा एकान्त भूमि इसके रहने का स्थान हैं।

पित्र्यर्क्षं भगदैवत्यमुत्तरांशश्च केसरी।
सूर्यक्षेत्रं विभोर्ब्रह्मन् हृदयं परिगीयते।।
सिंहस्तु पर्वतारण्यदुर्गकन्दरभूमिषु।
वसतु व्याघ्रपल्लीषु गह्वरेषु गुहासु च।।

सम्पूर्ण मघा, सम्पूर्ण पूर्वा फाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी का प्रथम चरण, सूर्य की सिंह राशि शंकर का हृदय कही जाती है। सिंह राशि का निवास वन, पर्वत, दुर्गम स्थान, कन्दरा (संकरे रास्ते/नाले), व्याघ्रों के स्थान, गुफा आदि हैं।

उत्तरांशास्त्रयः पाणिश्चित्रार्ध कन्यका त्वियम्।
सोमपुत्रस्य सद्यैतद् द्वितीयं जठरं विभोः।।
ब्रीहिप्रदीपिककरा नावारूढा च कन्यका।
चरते स्त्रीरतिस्थाने वसते नड्वलेषु च।।

उत्तराफाल्गुनी के अन्तिम तीन चरण, सम्पूर्ण हस्त नक्षत्र और चित्रा के प्रथम दो चरण, बुध की द्वितीय

राशि कन्या राशि शिवजी का जठर है। कन्या राशि अन्न और दीपक हाथ में लिए हुए है तथा नौका पर आरूढ़ है। यह स्त्रियों के रति स्थान और सरपत (कुश की तरह घास), कण्डा (गोबर) आदि में विचरण करती है।

चित्रांशद्वितयं स्वातिर्विशाखायांशकत्रयम्।
द्वितीयं शुक्रसदनं तुला नाभिरुदाहृता।।
तुलापाणिश्च पुरुषो वीथ्यापणविचारकः।
नगराध्वानशालासु वसते तत्र नारद।।

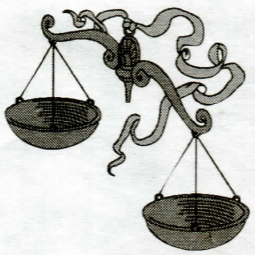

चित्रा के शेष दो चरण, स्वाति के चारों चरण और विशाखा के प्रथम तीन चरणों से युक्त शुक्र का दूसरा क्षेत्र तुला राशि महादेव की नाभि है। तुला राशि हाथ में तुला लिए पुरुष रूप में गलियों और बाजारों में विचरण करती है तथा नगरों, मार्गों और भवनों में निवास करती है।

विशाखांशमनूराधा ज्येष्ठा भौमगृहं त्विदम्।
द्वितीयं वृश्चिको राशिर्मेढ्रं कालस्वरूपिणः।
श्वभ्रवल्मीकसंचारी वृश्चिको वृश्चिकाकृतिः।
विषगोमयकीटादिपाषाणादिषु संस्थितः।।

विशाखा का अन्तिम एक चरण, सम्पूर्ण अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र मंगल का द्वितीय क्षेत्र वृश्चिक राशि कालरूपी महादेव का उपस्थ (गुप्तांग) है। वृश्चिक राशि का आकार बिच्छू जैसा है। यह गड्ढे एवं बल्मीक (दीमकों की मिट्टी का ढूह) आदि में विचरण करती है। यह विष, गोबर, कीट आदि में निवास करती है।

मूलं पूर्वोत्तरांशश्च देवाचार्यगृहं धनुः।
ऊरुयुगलमीशस्य अमर्षे प्रगीयते।।
धनुस्तुरङ्गजघनो दीप्यमानो धनुर्धरः।
वाजिशूरास्त्रविद्वीरः स्थायी गजरथादिषु।।

सम्पूर्ण मूल नक्षत्र, सम्पूर्ण पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण वाली धनु राशि बृहस्पति का क्षेत्र है। यह महेश्वर के दोनों उरू (जांघ) हैं। धनु राशि की जंघा घोड़े के समान है। यह ज्योतिःस्वरूप और धनुष लिए है। यह घुड़सवारी, वीरता के कार्य और अस्त्र-शस्त्र का ज्ञाता और शूर है। गज तथा रथ आदि में इसका निवास होता है।

उत्तरांशास्त्रयो ऋक्षं श्रवणं मकरो मुने।
धनिष्ठार्धं शनिक्षेत्रं जानुनी परमेष्ठिनः।।
मृगास्यो मकरो ब्रह्मन् वृषस्कन्धेक्षणाङ्घ्रिजः।
मकरोऽसौ नदीचारी वसते च महौदधौ।।

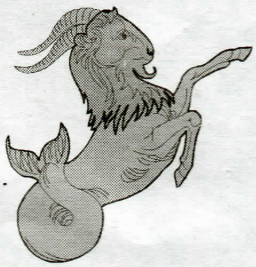

उत्तराषाढ़ा के शेष तीन चरण, सम्पूर्ण श्रवण और धनिष्ठा के प्रथम दो चरण की मकर राशि शनि का क्षेत्र और परमेष्ठी महेश्वर के दोनों घुटने हैं। मकर राशि के मुख मृग के मुख समान और कन्धे वृषभ के कन्धों के समान तथा नेत्र हाथी के नेत्र के समान हैं। यह राशि नदी में विचरण करती और समुद्र में विश्राम करती है।

धनिष्ठार्धं शतभिषा प्रौष्ठपद्यांशकत्रयम्।
सौरेः सद्मापरमिदं कुम्भो जंघे च विश्रुते।।
रिक्तकुम्भश्च पुरुषः स्कन्धधारी जलाप्लुतः।
द्यूतशालाचरः कुम्भः स्थायी शौण्डिकसद्मसु।।

धनिष्ठा के शेष दो चरण, सम्पूर्ण शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद के प्रथम तीन चरण वाली कुम्भ राशि शनि का द्वितीय गृह और शिव की दोनों पिण्डलियां हैं। कुम्भ राशि रिक्त घड़े को कन्धे पर लिए जल से भीगे पुरुष के समान है। इसका संचार स्थान द्यूत गृह (त्यागे हुए घर) एवं सुरालय (शराब घर) हैं।

प्रौष्ठपद्यांशमेकं तु उत्तरा रेवती तथा।
द्वितीयं जीवसदनं मीनस्तु चरणावुभौ।।
मीनद्वयमथासक्तं मीनस्तीर्थाब्धिसंचरः।
वसते पुण्यदेशेषु देवब्राह्मणसद्मसु।।

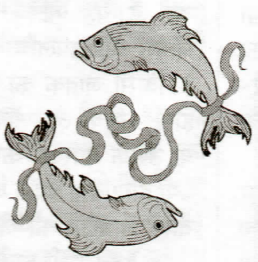

पूर्वाभाद्रपद का अन्तिम चरण, सम्पूर्ण उत्तराभाद्रपद और सम्पूर्ण रेवती नक्षत्रों वाला बृहस्पति का द्वितीय क्षेत्र और मीन राशि है। मीन राशि दो संयुक्त मछलियों के आकार वाली है। यह तीर्थस्थल और समुद्र में संचरण करती है। इसका निवास स्थान पवित्र स्थानों, देव मन्दिरों और ब्राह्मणों के घर में होता है।

कैसे पता लगाएं चोरी गया सामान मिलेगा अथवा नहीं

कोई भी सामान खोना/चोरी होना आज के समय में सामान्य बात है। अंक विद्या में गुम हुई वस्तु के बारे में प्रश्न किया जाए तो उसका जवाब बहुत हद तक सही प्राप्त किया जा सकता है। सर्वप्रथम आप 1 से 108 के बीच का एक अंक मन में सोचें और उस अंक को 9 से भाग दें। शेष जो अंक आये, तो आगे लिखे अनुसार उसका उत्तर होगा।

अंक	ग्रह	मिलने की स्थिति
1	सूर्य	पूर्व दिशा में मिलने की आशा
2	चन्द्रमा	स्त्री के पास, नहीं मिलेगी
3	गुरु	सामान घर में, प्रयास से मिलेगी
4	राहु	ढूंढ़ने के प्रयास व्यर्थ होंगे
5	बुध	कुछ समय बाद मिल सकेगी
6	शुक्र	कहीं रखकर भूल गए हैं
7	केतु	चिंता न करें, प्रयास से मिलेगी
8	शनि	प्रयास व्यर्थ सिद्ध होंगे
9	मंगल	मिलने की संभावना कम

उदाहरण के लिए अगर प्रश्नकर्ता ने 83 अंक कहा है तो 83 को 9 से भाग दें।

83/9 = 2, अतः शेष आया 2 जो चन्द्रमा का अंक है। वस्तु किसी स्त्री के पास है पर वापस प्राप्त नहीं होगी। खोये सामान की जानकारी मिलेगी अथवा नहीं मिलेगी? इसके लिए सभी नक्षत्रों को चार बराबर भागों में बांट दिया गया है। एक भाग में सात नक्षत्र आते हैं। उन्हें अंध, मंद, मध्य तथा सुलोचन नाम दिया गया है। इन नक्षत्रों के अनुसार चोरी की वस्तु का दिशा ज्ञान तथा फल ज्ञान के विषय में जो जानकारी प्राप्त होती है वह एकदम सटीक होती है।

नक्षत्रों का लोचन ज्ञान

अंध लोचन नक्षत्र : रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा।

मंद लोचन नक्षत्र : अश्विनी, मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा।

मध्य लोचन नक्षत्र : भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद।

सुलोचन नक्षत्र नक्षत्र : कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद।

यदि वस्तु अंध लोचन में खोई है तो वह पूर्व दिशा में शीघ्र मिल जाती है। यदि वस्तु मंद लोचन में गुम हुई है तो वह दक्षिण दिशा में होती है और गुम होने के 3-4 दिन बाद कष्ट से मिलती है।

यदि वस्तु मध्य लोचन में खोई है तो वह पश्चिम दिशा की ओर होती है और एक गुम होने के एक माह बाद उस वस्तु की जानकारी मिलती है। यदि वस्तु सुलोचन नक्षत्र में गुम हुई है तो वह उत्तर दिशा की ओर होती है।